देवनागरी उर्दू

हज़रत ईसा अल-मसीह के आठ अहकाम का खुलासा

हज़रत ईसा अल-मसीह के आठ अहकाम का खुलासा

पिछली तालीमात में हमने जाना कि हज़रत ईसा अल-मसीह कौन हैं। अब हम सीखेंगे कि हज़रत ईसा अल-मसीह की पैरवी यानी उनका रास्ता कैसे अपनाना है। आज से हम आठ ख़ास हिदायतों की तालीम शुरू कर रहे हैं। इन्हें हम कहते हैं — हज़रत ईसा अल-मसीह के आठ अहकाम कहते हैं।

पिछली बार हमने सुना कि कैसे हज़रत ईसा अल-मसीह का पैदा होना बहुत खास था। बहुत से नबियों ने उनके आने की पेशनगौई की थी। फ़रिश्तों ने भी हज़रत मरियम अलैहिस्सलाम और दूसरो को उनकी पैदाइश की खुशख़बरी दी थी।

हज़रत ईसा अल-मसीह कुंवारी से पैदा हुए। वो दुनिया में आए ताकि हमारी गुनाहों से निजात दें। उन्होंने बीमारों को अच्छा किया, मुर्दों को ज़िन्दा किया। वो इतने ताक़तवर हैं कि गुनाह भी माफ़ कर सकते हैं और इंसान के दिल के राज़ भी जानते हैं।

उन्होंने साफ़ कहा: **राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ सकता।**

अज़ीजो, अगर हम अल्लाह से रिश्ता बनाना चाहते हैं, तो हमें हज़रत ईसा अल-मसीह की बातों को सुनना और मानना होगा। लेकिन उनकी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी बात ये है कि उन्होंने सूली पर अपनी जान कुरबान की — ताकि हमारे गुनाह माफ़ हों। वो दफ़्न हुए, और तीसरे दिन दोबारा ज़िन्दा हुए। अपनी कब्र से बाहर निकले और फिर आसमान पर चले गए। अब वो अल्लाह के पास बैठे हैं और क़यामत के दिन वापिस आएँगे। इसीलिए, हमें उनकी हिदायतों को ग़ौर से सुनना और उस पर अमल करना चाहिए। उन्होंने कहा: **“अगर तुम मुझसे मोहब्बत करते हो तो मेरे अहकाम पर अमल करो।”**

हज़रत ईसा अल-मसीह ने बहुत सी हिदायतें दीं, मगर उनकी ये आठ अहकाम सबसे अहम हैं।

1. तौबा करना और ईमान लाना।
2. पाक ग़ुस्ल यानी बपतिस्मा लेना।
3. दुआ करना।
4. इंजील शरीफ़ सीखना।
5. लोगों को शागिर्द बनाना।
6. मोहब्बत करना।
7. जमाअत में शामिल होना और इशा-ए- रब्बानी यानी खुदावंद के नाम का खाना लेना।
8. सद़का खैरात देना।

अब हम थोड़ा-थोड़ा इन अहकाम को समझें:

पहली हुक्म: तौबा और ईमान। तौबा मतलब — ग़लत रास्ता छोड़ कर नया रास्ता अपनाना। ईमान मतलब — हज़रत ईसा अल-मसीह पर भरोसा करना। सोचिए, अगर कोई आदमी गाड़ी चला रहा हो और उसे पता चले कि वो उल्टी सिम्त में जा रहा है, तो उसे मोड़ना पड़ेगा। यही तौबा है — गलत रास्ता छोड़ कर सही तरफ़ जाना।

www.taleemulkalam.org

दूसरा हुक्म: पाक ग़ुस्ल। जब कोई शख़्स हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान लाता है, तो दूसरे ईमानवाले उसे पानी में पूरा डुबोता है। ये निशानी है कि उसने तौबा की है और अब वो मसीह का पैरोकार यानी मसीह का मानने वाला है।

तीसरा हुक्म: दुआ। दुआ मतलब — अल्लाह से बात करना। हज़रत ईसा अल-मसीह ने सिखाया कि हम किसी भी ज़ुबान में दुआ कर सकते हैं। अल्लाह अपने बच्चों की आवाज़ सुनना पसंद करता है।

चौथा हुक्म: इंजील शरीफ़ सीखना। इंजील शरीफ़ में हज़रत ईसा अल-मसीह की ज़िन्दगी और उनकी तालीम लिखी है। इस किताब में हिकमत और सचाई है। अगर हम मसीह के शागिर्द बनना चाहते हैं तो इस किताब को पढ़ना और समझना ज़रूरी है।

पाँचवां हुक्म: शागिर्द बनाना। जैसे अल्लाह हमें सिखाता है, वैसे ही हमें भी अपने दोस्तों, घरवालों और पड़ोसियों तक ये बातें पहुँचानी चाहिए।

छठां हुक्म: मोहब्बत। हज़रत ईसा अल-मसीह ने सिखाया कि सबसे बड़ी हिदायतें हैं — अल्लाह से मोहब्बत करना और अपने पड़ोसी से मोहब्बत करना।

सातवां हुक्म: जमाअत और इशा-ए-रब्बानी लेना। जमाअत यानी ईमान वालो की जमाअत। वो हफ़्ते में कम से कम एक बार मिलते हैं — दुआ करते हैं, इंजील शरीफ़ पढ़ते हैं, इबादत करते हैं और खुदावंद के नाम का खाना खाते हैं। ये खाना हमें याद दिलाता है कि हज़रत ईसा अल-मसीह ने हमारे गुनाहों के लिए सूली पर जान दी।

आठवां हुक्म: खैरात। अगर हम मसीह के पैरवीकार हैं, तो हमें अपने माल में से दूसरों को देना चाहिए। अल्लाह ने जो हमें दिया है, उससे दूसरों की मदद करना चाहिए।

मेरे अज़ीज़ो,

मुझे मालूम है कि ये आठ अहकाम पहली बार सुनने में ज़्यादा लग सकते हैं। मगर अगले सबक़ों में हम हर अहकाम को धीरे-धीरे समझेंगे और इंजील शरीफ़ से मिसालें लेंगे।

बस यह बात याद रखो — सिर्फ़ जानना काफ़ी नहीं, बल्कि इन हिदायतों पर अमल करना ज़िन्दगी बदल देता है।

www.taleemulkalam.org

हमसे जुड़ने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें.....